



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 513]
No. 513]

नई दिल्ली, बुधवार, नवम्बर 5, 1986/कार्तिक 14, 1908
NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 5, 1986/KARTIKA 14, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह जलग संकलन के रूप में
रखा जा सके ।

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as
a separate compilation

वित्त मंत्रालय
(आर्थिक कार्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 5 नवम्बर, 1986

इंधिरा विकास पत्र नियम, 1986

सा. का. नि. 1183 (अ):—केन्द्रीय सरकार, सरकारी
बचत-पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) की धारा
12 द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित
नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ :—(1) इन नियमों का
संक्षिप्त नाम इंधिरा विकास पत्र नियम, 1986 है ।

(2) ये 19 नवम्बर, 1986 को प्रवृत्त होंगे ।

2. परिभाषाएं :—इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से
अन्यथा अपेक्षित न हो, —

(i) “अधिनियम” से सरकारी बचत-पत्र अधिनियम,
1959 (1959 का 46) अभिप्रेत है ;

(ii) “नकद” से अभिप्रेत है भारतीय करेंसी में नकद ;

(iii) “पत्र” से इंधिरा विकास पत्र अभिप्रेत है ;

(iv) “डाक घर” से भारत में कोई ऐसा डाक घर
अभिप्रेत है जो बचत बैंक का कार्य कर रहा है ।

3. पत्रों के अंकित मूल्य :—पत्र, 500 रु. और 1000 रु.
के अंकित मूल्यों में जारी किए जाएंगे ।

4. पत्रों का क्रय :—(1) 500 रु. और 1000 रु.
के अंकित मूल्य वाले पत्र क्रमशः 250 रु. और 500 रु.
में क्रय किए जा सकेंगे ।

(2) नियम 3 में विनिर्दिष्ट अंकित मूल्य के कितने ही
पत्र क्रय किए जा सकेंगे ।

5. पत्रों के क्रय के लिए प्रक्रिया:—(1) कोई पत्र किसी डाक घर से निम्नलिखित रीतियों में से किसी एक रीति से संवाय किए जाने पर क्रय किया जा सकेगा, अर्थात् :—

(i) नकद; या

(ii) उसी डाकघर में जेता के नाम में जमा डाकघर बचत बैंक खाते से प्रत्याहरण के लिए पास बुक सहित सम्यक् रूप से हस्ताक्षरित प्रत्याहरण प्ररूप या चेक प्रस्तुत करके ।

(2) कोई प्ररूपिक आवेदन किसी पत्र के क्रय के लिए आवश्यक नहीं है ।

6. पत्र का जारी किया जाना :—(1) नियम 5 के अधीन संवाय किए जाने पर, पत्र तत्काल जारी किया जाएगा और ऐसे पत्र के जारी किए जाने की तारीख संवाय की तारीख होगी ।

(2) यदि किसी कारण से कोई पत्र तत्काल जारी नहीं किया जा सकता है तो जेता को ऐसी अनन्तिम रसीद दी जाएगी जिसके बबले में बाब में अनन्तिम रसीद धारण करने वाले व्यक्ति द्वारा पत्र लिया जा सकेगा ।

(3) इस नियम के अधीन जारी किया गया पत्र अंतरणीय है ।

7. पत्र का प्रतिस्थापन:— (1) यदि कोई पत्र बिकृत या विकृत हो जाता है तो धारक, जारी करने वाले डाकघर से, एक रुपया फीस का संवाय किए जाने पर प्रतिस्थापन का हकदार होगा ।

(2) ऐसा कोई पत्र, जो खो जाता है, चुरा लिया जाता है अथवा इस प्रकार बिकृत, विकृत या नष्ट हो जाता है कि उसे पहचाना नहीं जा सकता है, किसी डाकघर द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जाएगा ।

8. पत्र का मुनाया जाना :—किसी भी अंकित मूल्य का पत्र उसके जारी किए जाने की तारीख से पांच वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् किसी भी समय, जारी करने वाले डाकघर के समक्ष उसे प्रस्तुत करके मुनाया जा सकेगा ;

परन्तु कोई पत्र किसी डाक घर से, यदि उस डाक घर के भारसाधक अधिकारी का जारी करने वाले डाक घर से स्थापन किए जाने पर यह समाधान हो जाता है कि ऐसा पत्र उक्त डाक घर द्वारा जारी किया गया था तो, मुनाया जा सकेगा ।

9. पत्र का उन्मोचन —किसी पत्र को मुनाए जाने के लिए प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति उसके पृष्ठ पर दिए गए स्थान में संवाय प्राप्त करने के प्रमाणस्वरूप हस्ताक्षर करेगा और उस पर अपना नाम और पता उपरलिखित करेगा ।

10. डाक घर का उत्तरदायित्व :—

डाक घर, किसी व्यक्ति द्वारा पत्र का कब्जा अभिप्राप्त

करने और उसे कपटपूर्वक भुनाने से धारक को हुई हानि के लिए उत्तरदायी नहीं होगा ।

11. शिथिल करने की शक्ति :—जहां केन्द्रीय सरकार का यह समाधान हो जाता है कि इन नियमों के किसी उपबन्ध के प्रवर्तन से, किसी पत्र के धारक को असम्बन्ध कष्ट होता है वहां वह, ऐसे कारणों से जो लेखबद्ध किए जाएंगे, उस उपबन्ध की अपेक्षाओं को ऐसी रीति से, जो अधिनियम के उपबन्धों से असंगत न हो, आदेश द्वारा, शिथिल कर सकेगी ।

[सं. फा. 3/16/86—एन एस (I)]

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

NOTIFICATION

New Delhi, the 5th November, 1986

INDIRA VIKAS PATRA RULES 1986

G.S.R. 1183(E).—In exercise of the powers conferred by section 12 of Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959), the Central Government hereby makes the following rules, namely—

1. Short title and commencement—

- (1) These rules may be called the Indira Vikas Patra Rules, 1986.
- (2) They shall come into force on the 19th day of November, 1986.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires,—

- (i) “Act” means the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959);
- (ii) “Cash” means cash in Indian currency;
- (iii) “Certificate” means the Indira Vikas Patra;
- (iv) “Post Office” means any Post Office in India doing savings bank work.

3. Denominations of certificates.—The certificate shall be issued in denominations of Rs. 500/- and Rs. 1000/-.

4. Purchase of certificates—

- (1) The certificates of denomination of Rs. 500/- and Rs. 1000/- may be purchased for Rs. 250/- and Rs. 500/- respectively.
- (2) Any number of certificates of the denominations specified in rule 3 may be purchased.

5. Procedure for purchase of certificates.—(1) A certificate may be purchased at a Post Office on payment in either of the following modes, namely :—

- (i) by cash; or

(ii) by presenting a duly signed withdrawal form or cheque, together with the Pass Book for withdrawal from the Post Office Savings Account standing in the credit of the purchaser at the same Post Office.

(2) No formal application is necessary for purchase of a certificate.

6. Issue of certificate.—(1) On payment being made under rule 5, a certificate shall be issued immediately and the date of issue of such certificate shall be the date of payment.

(2) If for any reason a certificate cannot be issued immediately, a provisional receipt shall be given to the purchaser, which may later be exchanged for a certificate by the person holding the provisional receipt.

(3) A certificate issued under this rule is transferable.

7. Replacement of certificate.—(1) If a certificate is mutilated or defaced, the bearer is entitled for replacement from the Post Office of issue on payment of fee of rupee one.

(2) A certificate lost, stolen, mutilated defaced or destroyed beyond recognition, will not be replaced by any Post Office.

8. Encashment of certificate.—A certificate of any denomination may be encashed at any time after the expiry of a period of five years from the date of issue by presenting it before the Post Office of issue:

Provided that a certificate may be encashed at any other Post Office if the Officer-in-charge of that Post Office is satisfied on verification from the Post Office of issue that such certificate was issued by the said Post Office.

9. Discharge of certificate.—The person presenting a certificate for encashment shall sign in the space provided on the back thereof in token of having received the payment and indicate thereon his name and address.

10. Responsibility of the Post Office.—The Post Office shall not be responsible for any loss caused to a holder by any person obtaining possession of a certificate and fraudulently encashing it.

11. Power to relax.—Where the Central Government is satisfied that the operation of any of the provisions in these rules causes undue hardship to the holder of a certificate, it may, by order, for reasons to be recorded in writing, relax the requirements of that provision in a manner not inconsistent with the provisions of the Act.

[No. F. 3/16/86-NS(i)]

सा. का. नि. 1184 (अ):—केन्द्रीय सरकार, सरकारी बचत-पत्र अधिनियम, 1959 (1959 का 46) की धारा 1 की उपधारा (3) द्वारा प्रवक्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह विनिश्चित करती है कि उक्त अधिनियम के उपबंध इंदिरा विकास पत्र को लागू होंगे।

[सं. फा. 3/16/86—एम. एस. (ii)]

के. एस. शास्त्री, अपर सचिव

G.S.R. 1184(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 1 of the Government Savings Certificates Act, 1959 (46 of 1959), the Central Government hereby specifies that the provisions of the said Act shall apply to the Indira Vikas Patra.

[No. F. 3/16/86-NS(ii)]

K. S. SASTRY, Addl. Secy.

